बीच की घण्टी

"उम्दू, तुझे कम सुनाई देता है क्या? मैं तुझे कब से बुला रही थी।" अर्शी बोली। उम्दू यह सुनकर कुछ सोचने लगा। सोचता तो वह मन में था पर यह बात उसके चेहरे से ही साफ-साफ दिखाई दे जाती थी। यही देखकर अर्शी को लगा कि वह ज़रूर कुछ सोच रहा है। अर्शी बोली, "अब इसमें सोचने जैसी क्या बात है?" उम्दू मद्धिम-मद्धिम मुस्कुराया, "अर्शी, मैं यह सोच रहा था कि अगर ऊँचा सुनने की जगह लोग कम सुनते तो क्या होता। जैसे, तुमने कहा था... देख, बबूल पीले फूलों से लद गया है। उसकी जगह मुझे सुनाई देता – देख, बबूल पीले....। तो, यानी तूने आधा ही सुना है।" अर्शी बोली, "मैंने यह भी तो कहा था कि छोटे-छोटे हरे पत्तों के बीच छोटे-छोटे पीले फूल।"

अर्शी ने मुट्ठी खोली। खुली मुट्ठी में दो बहुत सुन्दर पीले फूल पड़े थे। फूल बहुत खुश-खुश लग रहे थे। जैसे, उन्हें अभी तक यह पता ही नहीं हो कि वे अब बबूल की डाल पर नहीं हैं। उम्दू भी शायद यही सोच रहा था। इसलिए उसने एक फूल को उँगली से ऐसे उठाया जैसे डाली से फूल को तोड़ते हैं। फूल जुड़ा होता तो डाल थोड़ी हिल जाती। उसने अपनी हथेली में वही फूल रखकर देखा।

उम्दू कुछ सोच रहा था। इससे पहले कि वह उसे कह पाता इम्मू चिल्लाई, "अर्शी, उम्दू, मिल्ली जल्दी आओ।" वे तीनों भागे। इम्मू, अली के साथ छठी के बीस बच्चे इमली के पेड़ तले खड़े थे। गुरुजी इमली पे चढ़े थे। सारे बच्चे उन्हें एक पतली डाल पर जाने को कह रहे थे जो इमलियों से लदी थी। वे बार-बार कह रहे थे कि डाल टूट जाएगी। गुरुजी बोले, "उम्दू, तुम्हें क्या लगता है डाल मेरा वज़न सह लेगी?" "सर, मैं भूल जाता हूँ इसलिए पहले मैं एक चीज़ आपसे पूछ लूँ। फिर मैं सोचकर आपके सवाल का जवाब दूँगा।" गुरुजी जिस डाल पर खड़े थे उसी पर बैठ गए। फिर बोले, "हाँ, उम्दू पूछो।" "सर, इमली के नाम से मुँह में पानी क्यों आता है?" गुरुजी बोले, "ऐसा होता तो है पर मुझे ठीक-ठीक पता नहीं क्यों होता है। मैं पता करके बताऊँगा।"

अर्शी बोली, "गुरुजी, मुँह में पानी आना इमली के मिस काल की तरह है।" गुरुजी, सब बच्चे और इमली तीनों इस बात पर खूब हँसे।

चित्र : अतनु राय